मंगलाचरण

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

श्री-श्री जी की आठ पहर की वृत्त जो श्री पद्मावती पुरी में भई सो सुरू ।

अव्वल हक के दिल में, खेल दिखाऊं रूहन ।
इस्क रबद खिलवत की, बातां करें सैयन ।।१।।

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुंदरसाथ जी ! परमधाम में जहां लीला सदा इश्क आनन्द की होती है, कुछ समय से इश्क पर वार्तालाप (रब्द) अक्षरातीत और उनकी अंगनाओं के बीच हो रहा था, उसका बेवरा (फैसला) करने के लिए, क्योंकि आत्माएं सदा अपना ही इश्क अधिक होने की बातें करती थी इसलिए सबसे पहले अक्षरातीत पारब्रह्म ने अपने दिल में रूहों को झूठे संसार का खेल दिखाकर फैसला (बेवरा) करूं, ऐसा दिल में लिया । इसके बिना परमधाम में और कोई उपाय ही नहीं था कि खिलवत के इश्क रब्द को समाप्त किया जाए ।

चाह करें खेल देखने, मैं बरजो तीन बेर ।
त्यों त्यों मांगे फेर फेर, रबद चढ़ी सिर मेर ।।२।।

जैसे ही इस विचार को इश्क रब्द का बेवरा करने के लिए रूहों के सामने रखा तो उनके लिए दुःख भरा संसार नई वस्तु होने के कारण से इसको देखने की तीव्र इच्छा जागृत हो गई । आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि मैंने परमधाम में ब्रह्मअंगनाओं को खेल में न जाने के लिए तीन बार रोका। जैसे-जैसे मैंने रोका, वैसे-वैसे इनके दिल में भ्रांति बैठ गई, झूठा खेल देखने की इच्छा बैठ गई कि यह कोई अच्छी वस्तु है, अवश्य ही देखनी है और माया हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी ।

देख्या ब्रजरास को, तीसरे जो हिसाब ।
आए मेरे आगे बातें करे, लेकर बड़ा सवाब ।।३।।

तब ब्रज में ११ साल ५२ दिन की लीला और रास में एक अखण्ड रात्रि की लीला देखने के बाद जब परमधाम वापिस गए तो उल्टा मुझे ही रूहें सिखापन देने लगी कि आपकी माया ने बृज, रास में हमारा क्या बिगाड़ा । ये माया एक पल भी आपके चरणों से जुदा नहीं कर सकी । इसलिए आपने जो-जो खेल में दिखाने को कहा था और ब्रज रास में नहीं देखा, वह हमने अब अवश्य ही देखना है ।

Nijanand App

तब लिया हकें दिल में, ए जो चौदह तबक ।
तिन में जम्बूद्वीप में, भरत खण्ड बुजरक ।।४।।

फिर श्री राजजी महाराज ने दिल में लिया कि यह चौदह लोकों का जो संसार है, इसमें जम्बूद्वीप और उसमें भी भरतखंड (भारतवर्ष) जहां सब प्रकार के सांसारिक सुख उपलब्ध हैं और ग्रन्थों से मानवता का ज्ञान भी समझा जा सकता है, ऐसे स्थान को दिल में लिया ।

तिनमें विसेख देख के, ए जो खण्ड बुन्देल ।
काएम सिफत तिनकी, जो तीसरा तकरार लेल ।।५।।

और उस सारे भारतवर्ष में भी सबसे उत्तम और खास स्थान बुन्देलखण्ड में श्री पन्ना जी को अपना धाम बनाने के लिए चुना । उस पन्ना जी की महिमा इस तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में सब से महान और अखंड है ।

तामें सिरे सिरदार की, ए जो परना ठौर ।
तिनमें सिफत छत्रसाल की, नहीं पटन्तर और ।।६।।

और उस बुन्देलखंड में भी जो पन्ना की महान धरती और फिर वहां भी सब के सिरदार छत्रसाल की तुलना में और कोई आ ही नहीं सकता ।

मिलावा सैयन का, तामें हुकम सिरदार ।
हकी सूरत धनीए की, करें ब्रह्मसृष्टि सों प्यार ।।७।।

ब्रह्मसृष्टियों के गिरोह को खेल दिखाने के लिए श्री राजजी महाराज ने परमधाम से अपने हुकम के स्वरूप को इनका सिरदार बनाकर संसार में उतारा और स्वयं अपनी हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के रूप में धारण कर इनके वास्ते उतरे, जो हर तरह से हर पल इनको प्यार करते हैं ।

इन सरूप की इन जुबां, कही न जाए सिफत ।
सब्दातीत के पार की, सों कहनी जुबां हद इत ।।८।।

पारब्रह्म अक्षरातीत की ये हकी सूरत, जो संसार में विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां ईमाम मेंहदी के स्वरूप में जाहेर हुई है, जिनकी महिमा शब्दातीत है, संसार के सीमित शब्दों में उसका वर्णन कैसे सम्भव हो सकता है ।

सागर सुख अनगिनती, पल पल लेत सैयन ।
जो सेवा में सामिल, करते जो इन तन ।।९।।

परमधाम के अखंड अनगिनत अपार सुख श्री प्राणनाथ जी की ही अपार कृपा से मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) ने पल-पल इस नश्वर जगत में इस तन से श्री प्राणनाथ जी की सेवा में आठों पहर चौसठ घड़ी शामिल होकर लिए।

Nijanand App

एक पल सेवन की, सुख आवे न इन जुबान ।
लिखा अग्यारह सौ बरस का, ए लिया जिन ईमान ॥१०॥

उस अखंड आनन्दमयी सेवा का सुख मोमिनों ने लिया । उस सेवा के एक पल का भी वर्णन इस जुबां से नहीं हो सकता । जिन मोमिनों को अपने धनी श्री प्राणनाथ जी के आने तथा कयामत के जाहेर होने के सन्देश को सुनकर ईमान आ गया, उनकी इस महान महिमा को महंमद साहब ने ११०० वर्ष पहले से ही कुरान में लिख दिया था ।

तिन सैयों की सिफत, क्यों सके कोई कर ।
पर हुकम कहेवे धनी का, ए सिफत सब ऊपर ॥११॥

उन मोमिनों की प्रशंसा का वर्णन कोई कर ही नहीं सकता, पर उस पारब्रह्म की शक्ति ही इस महिमा को कह रही है । यह महिमा सर्वश्रेष्ठ है ।

तामें सेवा कर जो संग चले, ताकी सुमार न आवे सिफत ।
एतो भई बका मिने, ए कहनी जुबां हद इत ॥१२॥

उन सब सुन्दरसाथ में से भी जो अपने धनी श्री प्राणनाथ जी की सेवा के लिए माया का सब कुछ छोड़कर साथ चल पड़े, उनकी प्रशंसा का पार नहीं पाया जा सकता । उनकी महिमा की चर्चा परमधाम में होगी । यहां इस झूठे मुख की सांसारिक जुबां से वर्णन करना असम्भव कार्य है ।

पर आज्ञा कहावत है, इत मैं तें कछुए नाहिं ।
सैयन मिलावे मिने, याद ल्यावें दिल माहिं ॥१३॥

परन्तु क्या करें ये सब उस धाम धनी की आज्ञा (हुकम) ही मेरे से कहलवा रही है । जिसमें मैं-तैं का कोई स्थान ही नहीं है । मूल मिलावे में जाग्रत होने के बाद इन सब बातों को हम याद करेंगे ।

जो याद करें यकीन सों, सो बैठे बका बीच धाम ।
सो दोऊ लोक में सिफत, होवे पूरन मनोरथ काम ॥१४॥

जो इस झूठे संसार में रह कर पक्के ईमान के साथ, यकीन से चितवन कर अपने मूल स्वरूप श्री राज श्यामा जी को याद करता है और अक्षरातीत की हकी सूरत धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी को पूरे यकीन के साथ याद करता है, ऐसे सुन्दरसाथ की सिफत इस संसार और परमधाम में होगी और उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी । निश्चय ही ऐसे सुन्दरसाथ की परआतम मूल मिलावे में बैठी है और वो मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) में से एक है ।

Nijanand App

साका विजियाभिनन्द का, बरस एक हजार नव्बे ।
सम्बत सत्रह सै पैंतीस में, पहुंची सरत जो ए ॥१५॥

जब सम्वत् १७३५ (१६७८ई०) में हिजरी सन् १०९० हुए जैसा कुरान में लिखा था तभी विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार और परमधाम के मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) का संसार में जाहिर होने का समय आ गया । जो हिन्दुओं के ग्रन्थों की भविष्यवाणी के अनुसार था, उसी समय विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार का शाका शुरू हुआ ।

साके पांच परना मिनें, हुकम स्यामा जी श्री देवचन्द्र जी सामिल ।
दावत करी जाहिर, भई सकुण्डल सामिल ॥१६॥

हरिद्वार से आप विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार अपने सुंदरसाथ को लेकर सम्वत् १७४० (१६८३ ई०) में पन्ना पधारे । तब विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार का ५वां शाका हुआ था । अक्षरातीत पारब्रह्म के हुकम के स्वरूप महंमद साहब और आनन्द स्वरूप श्यामा महारानी ईसा रूहअल्लाह (देवचन्द्र जी) भी ईमाम मेंहदी के तन में शामिल हैं ।

ईमाम मेंहदी साहब के प्रगट होने और कयामत के जाहेर होने का आत्म जागृति का संदेश साकुण्डल (महाराज छत्रसाल जी) ने सुना और वो भी इस कयामत की दावत (निमंत्रण) को जाहिर करने के लिए इनके साथ शामिल हुई ।

बेवरा तीन सूरत का, जुदे हवाले जुदे काम ।
एक हुकम जोस एक आतम, पहुंचे एके बखत मुकाम ॥१७॥

अक्षरातीत के हुकम के स्वरूप महंमद साहब की तीन सूरतें अलफ, लाम, मीम-बसरी, मलकी, हकी तीनों के कार्यों का जुदा-जुदा वर्णन है । महंमद साहब हुकम और अक्षरातीत के जोश के स्वरूप हैं । देवचन्द्र जी के तन में रूहअल्लाह श्यामा जी महारानी विराजमान हुए और प्राणनाथ जी के स्वरूप में आप हक अक्षरातीत हकी सूरत में विराजमान हैं । ये तीनों स्वरूप एक ही समय में हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के अंदर विराजमान हो कर परमधाम पहुंचे ।

धनी हजूर पहुंचे तीनों, भई मजकूर तिन से ।
सुने हरफ नब्बे हजार के, सब रोसनी इनमें ॥१८॥

तीनों स्वरूप अक्षरातीत पारब्रह्म श्री राज जी महाराज के चरणों में पहुंचे । इनकी श्री राजजी से वातें हुई । उनमें से महंमद साहब के हुकम के स्वरूप बसरी सूरत ने ९०००० शब्द सुने और मलकी सूरत (श्यामा महारानी) ईसा रूहअल्लाह उनके भेद खोलने की चाबी ''तारतम'' लेकर आए और अब हकी सूरत खुद श्री प्राणनाथ जी ने उन सब के छिपे भेदों को जाहिर किया है ।

Nijanand App

बसरी मलकी और हकी, ए हुकम तीन सूरत ।
तिन दई हैयाती दुनी को, करी सैयन वास्ते सरत ॥१९॥

बसरी, मलकी और हकी ये श्री राज जी महाराज के हुकम की तीनों सूरतें हैं । इनमें से हुकम के स्वरूप बसरी सूरत महंमद साहब ने कुरान में ग्यारहवीं सदी में ईमाम मेंहदी साहब और मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के आने की खबर दी है और हकी सूरत आप ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी महाराज सारे संसार के लोगों को आठ बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे ।

आई एक हजारें, सूरत जो बसरी ।
दूसरी दसमी सदी मिने, निजधाम से उतरी ॥२०॥

हुकम के स्वरूप महंमद साहब बसरी सूरत मोमिन ब्रह्मसृष्टियों के आने से १००० वर्ष पहले आए। दूसरी मलकी सूरत १०वीं सदी में परमधाम से श्यामा महारानी ईसा रूहअल्लाह उतरे ।

तीसरी जो हकी कही, तिन आई वारसी दोए ।
मता तीन सूरत का, किया हुकमें जाहिर सोए ॥२१॥

तीसरी हकी सूरत स्वयं श्री प्राणनाथ जी के पास इन दोनों स्वरूपों बसरी और मलकी के आत्म तत्व के ज्ञान का खजाना विरासत में मिला अर्थात् उन दोनों के ज्ञान के ये मालिक हुए और तीनों स्वरूपों के अखण्ड ज्ञान को श्री राज जी महाराज के हुकम से हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी ने आकर जाहिर किया।

हुकम देवचन्द्र जी स्यामा जी, ए तीनों के फैल हाल ।
सारा मुदा इनों पर, ना कोई इन मिसाल ॥२२॥

हुकम के स्वरूप महंमद साहब, श्यामा जी के अवतार देवचन्द्र जी और तीसरी हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी इन तीनों ने सारे संसार में परमधाम के कुल हकीकत और मारफत के ज्ञान को दुनियां में जाहिर किया और उस ज्ञान का कुल सार अर्थात् मुद्दा हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के हाथों में है, जो आखिरत के समय खुद न्यायाधीश बन कर सारी दुनियां को करनी के अनुसार ८ बहिश्तों में अखण्ड करेंगे । इस हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के समान और कोई दूसरा नहीं हो सकता है ।

रोसनी तीन सूरत की, तीनों के जुदे जहूर ।
बैठक बका बारीकियां, किए जाहिर तीनों नूर ॥२३॥

तीनों स्वरूपों के नूर, जोशमय प्रकाश (अखण्ड ज्ञान) का अवतरण जुदा-२ रूप से हुआ । परमधाम के २५ पक्ष एवं मूल मिलावे की बारीक रसमयी बातों का अखण्ड ज्ञान पारब्रह्म के हुकम के अनुसार अपने-अपने समय पर जाहिर हुआ ।

Nijanand App

हुकम जोस बसरी पर, आए निजधाम से दोए ।
जिने देख्या सो जाहिर किया, इन बिना जाने न कोए ॥२४॥

बसरी स्वरूप महंमद साहब में परमधाम की दो शक्तियां, श्री राज जी महाराज का हुकम और जोश आए । महमंद साहब ने जिसको परमधाम के योग्य देखा, उसे ही अपने ज्ञान के कुछ रहस्य बताए । महंमद साहब के पूरे ज्ञान कुरान को उनके सिवाय कोई भी समझ नहीं सका ।

रूह फूंकी मलकी मिने, रूह अपना दिया खिताब ।
सो कुंजी फुरमान की, सबों दिखाया हैयाती आब ॥२५॥

मलकी सूरत श्री देवचन्द्र जी के अंदर श्री राज जी महाराज ने अपनी रूह फूंकी । श्यामा जी की आतम को उतार कर उसमें बिठाया और उसको अपनी रूह की उपाधि दी । श्यामा महारानी ईसा रूहअल्लाह श्री देवचन्द्र जी सब ग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य को खोलने की तारतम ज्ञान की कुंजी ले कर दुनियां में उतरे, जिसके द्वारा ही सबको अखण्ड मुक्ति देने वाला रास्ता दिखाया अर्थात निजानन्द सम्प्रदाय को चलाया । जिससे सारी दुनियां को अखंड परमधाम के २५ पक्षों का ज्ञान मिल गया ।

हक हिकमत हकी मिने, जित आई अकल नूर ।
तिन मता लिया सबन का, जाहिर किया बका जहूर ॥२६॥

पारब्रह्म अक्षरातीत की हिकमत (युक्ति) हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के अंदर साक्षात् विराजमान हुई और जहां अक्षरातीत की निजबुध और अक्षर ब्रह्म की जाग्रत बुद्ध ने प्रवेश किया तो स्वामी जी ने महंमद साहब का और श्यामा महारानी देवचन्द्र जी का कुल ज्ञान लेकर श्री राजजी महाराज के हुकम से अखण्ड परमधाम के २५ पक्षों की महिमा को इस संसार में जाहिर कर दिया ।

दुनी पैदा जुलमत से, हिरस हवा सैतान ।
सो पहुंचे पेड़े लों, चढ़े न चौथे आसमान ॥२७॥

संसार की उत्पत्ति अंधकार रूप मोहतत्व से हुई है । इसमें शैतान की मायावी शक्तियों (विकारों) की भरमार है । इस मोहतत्व से पैदा हुए जीव अनेकों प्रयत्न करने पर भी अपने मूल तत्व तक ही पहुंच पाते हैं । चौथे आसमान परमधाम तक उनका पहुंचना ही नहीं हो पाता और वह अपने मूल ठिकाने बैकुंठ तक ही जा पाते हैं ।

तीन वजह की पैदाइस, लिखी अपने कलाम ।
और लिखा सास्त्रों मिनें, पावे न खलक आम ॥२८॥

संसार में तीन तरह के उत्पन्न लोगों का बेवरा कुरान और पुराण में लिखा है जो जीव सृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि है । संसार के लोग ग्रन्थों को बार-बार पढ़ने पर भी इस रहस्य को समझ नहीं पाते।

Nijanand App

प्रमाण : सास्त्रों तीनों सृष्ट कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म ।
तिनके ठौर जुदे जुदे, ए देखियो अनुकरम ॥

(किरंतन प्रकरण ७३ चौपाई २२)

कहो तीनों का बेवरा, लाहूत जबरूत मलकूत ।
फैल तीनों करत हैं, बीच जिमी नासूत ॥२९॥

इन तीनों प्रकार के लोगों की उत्पत्ति के मूल ठिकाने का वर्णन करते हैं । ब्रह्मसृष्टि लाहूत (परमधाम) से, ईश्वरी सृष्टि जबरूत (अक्षर धाम) से और जीवसृष्टि मलकूत (बैकुण्ठ) से उतरी है । इस नश्वर जगत में रहकर तीनों ने अपने स्वभाव अनुसार आचरण कर अपना रूप प्रगट किया ।

सैया वाहेदत में असल, तिनके फैल तिन माफक ।
सो समझे अपनी जात को, निजधाम जिनका हक ॥३०॥

सखियां ब्रह्मात्माएं संसार में परमधाम से आई और उनकी रहनी परमधाम के अनुसार ही रही । उन्होंने कुलजम सरूप की वाणी से ही अपने साथी जो परमधाम में रहते हैं, उनकी पहचान की । जिनका अपना मूल घर परमधाम है, जहां साक्षात् धाम के धनी रहते हैं ।

और गिरोह जबरूती, आए लगी इन सोहोबत ।
सो आई नूर अकल बीच, जो अक्षर की निसबत ॥३१॥

और अक्षर ब्रह्म की ईश्वरी सृष्टि भी इनकी सोहबत में आ गई । वो भी जागृत बुध के तारतम ज्ञान से अपने मूल ठिकाने अक्षर धाम को पहचान सकी । इसलिए उन्होंने तारतम के द्वारा भक्ति की । वो परमधाम नहीं पहुंच सकी ।

और आम खलक जो तीसरी, मलकूती अकल ।
ए आगे ना चल सके, नकल की नकल ॥३२॥

तीसरी जीवसृष्टि को जो आम खलक है, उसे बैकुण्ठ की कर्मकाण्ड और आग-पानी-पत्थर की पूजा करने वाली अक्ल मिली इसलिए वो उसी के बल से ही बैकुण्ठ तक पहुंचते हैं । उनको उससे परे अक्षर और अक्षरातीत की पहचान नहीं है । ये हमारी नकल आत्मा और आत्मा की नकल जीव हैं ।

हुकम के अमल में, ना कोई उतरे मोमिन ।
हकीकत मारफत की, किन आगे करें रोसन ॥३३॥

हुकम के स्वरूप महंमद साहब के समय में ब्रह्मसृष्टि संसार में नहीं उतरी थी । इसलिए महंमद साहब ने दुनियां में किसी के आगे भी हकीकत और मारफत का ज्ञान नहीं खोला ।

Nijanand App

तब हरफ करमकाण्ड के, कहे तीस हजार ।
होसी हकीकत मारफत जाहिर, बीच सैंया बारे हजार ॥३४॥

इसलिए उन्होंने ९०,००० शब्दों में से, ३०००० शरीयत कर्मकाण्ड के शब्द ही संसार के लोगों के लिए जाहेर किए । हकीकत और मारफत जिससे परमधाम, अक्षर और अक्षरातीत की पहचान होती है, उन ६०,००० शब्दों को परमधाम की आत्माओं के सामने खोलने का वायदा किया ।

चढ़ नासूत मलकूत, छोड़ सुंन ला मकान ।
और देखा नूर मकान, छोड़ी रोसनी इन आसमान ॥३५॥

एक दिन महंमद साहब ध्यान में मृत्युलोक, बैकुण्ठ और शून्य निरंजन से आगे क्षर ब्रह्मांड को छोड़ कर अक्षर ब्रह्माण्ड पहुंचे और अक्षर धाम में भी वो ठहर न पाए ।

इतथें आया इसक, बैठे तिन तखत ।
पहुंचे अरस अजीम में, तहां देखी हक सूरत ॥३६॥

अक्षर धाम से उनको परमधाम ले जाने के लिए रफ रफ का तख्ता आया (इश्क की शक्ति आई), जिससे उन्होंने परमधाम के मूल मिलावे में जा कर श्री राज जी श्यामा जी के स्वरूप के दर्शन किए ।

देखा मिलावा धनी का, रूहें बारे हजार ।
और देखा अरस अजीम को, चौथा नूर के पार ॥३७॥

परमधाम के मूल मिलावे में १२००० आत्माओं को श्री राज जी महाराज के चरणों में बैठा देखा । अक्षर धाम से परे शोभायमान परमधाम को महंमद साहब ने देखा । जिसको कुरान में चौथा आसमान कहा है ।

होज जोए बाग जानवर, देखी हक मोहलात ।
पाई माफक साहिदी, जो जाहिर करी बात ॥३८॥

उन्होंने परमधाम में हौज कौसर ताल, जमुना जी, अनेक प्रकार के जानवर, बाग-बगीचे और नूरमयी मोहोलातें देखीं । जैसी अपार साहेबी अक्षरातीत श्री राज जी महाराज की थी, वैसी ही अपार शोभा उनके परमधाम की देखी और वैसा ही उन्होंने कुरान में वर्णन किया ।

कहे दो तकरार लेल के, उतरे रूहें फिरस्ते जित ।
सो फेर आवेंगे आखरत, करी बातें साबित ॥३९॥

श्री राज जी महाराज अक्षरातीत ने लैल-तुल-कद्र की रात्रि के दो तकरारों (भागों) में ब्रज और रास लीला के लिए ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरी सृष्टि को उतारा । वही आत्माएं लैल-तुल-कद्र के तीसरे तकरार जागनी के ब्रह्माण्ड में आएंगी । जो महंमद साहब ने लिखा था, उन सब कुरान के गुह्य इशारों की हकीकत को तीसरी हकी सूरत ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने आकर जाहेर करके सत्य कर दिया ।

Nijanand App

इत आवन को आगम, बातां करी बनाए ।
ए खेल देख सैयां पीछे फिरें, रहीतामें सक न कांए ॥४०॥

महंमद साहब ने बड़े अनोखे ढंग के इशारों में ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि के संसार में आने की भविष्यवाणी की जो संसार के इस जागनी के ब्रह्मांड को देख कर वापिस लौटेंगी । इस बात में किसी को कोई शक नहीं रहा ।

सेवा सिफत मोमिन की, पहुंचत है सब हक ।
इन समान बन्दगी, नहीं कोई बुजरक ॥४१॥

इस संसार में जो कोई भी इन मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) की सेवा करता है या महिमा गाता है वह पारब्रह्म की सेवा और सिफत के समान होती है । इस दुनियां में मोमिनों की सेवा के समान और कोई बंदगी नहीं है ।

और सुंनत जमात की, जो बातें हक सोहोबत ।
तिनको दीदार जो करे, ताकी न आवे जुबां सिफत ॥४२॥

जो मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) उस पारब्रह्म अक्षरातीत की वाणी सुन कर यकीन लाए हैं औरहर समय परमधाम की आनन्दमयी लीला और परमधाम के २५ पक्षों के सुखों की ही बातें करते हैं, ऐसे मोमिनों के जो दुनियां वाले दर्शन भी कर लेते हैं, उनकी प्रशंसा वाणी से नहीं की जा सकती ।

तो इन जमात की क्यों कहों, सोभा सत इन मुख ।
ए सोभा सब्दातीत की, कहयो न जाए ये सुख ॥४३॥

तो फिर इन मोमिनों के गिरोह की अखण्ड महिमा इस मुख से कैसे कहें । ये शोभा तो शब्दातीत पारब्रह्म सच्चिदानन्द की है । जो इस जुबां से नहीं की जा सकती ।

इनकी सिफत सुक जी कहें, और सास्त्रों वेद व्यास ।
त्रिगुन अपने चित में, रज की राखें आस ॥४४॥

इन ब्रह्ममुनियों की महिमा सुकदेव मुनि ने बताई और शास्त्रों में वेदव्यास जी ने उनकी महिमा की चर्चा की है । त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु और महादेव) भी हमेशा इनकी चरणधूलि के लिए तरसते रहते हैं ।

और नाम केते लेऊं, ब्रह्मांड के धनी ऊपर ।
सब कोई सेवे सनेह सों, अपना इष्ट चित धर ॥४५॥

संसार के जो परमात्मा कहलाते हैं उनसे बढ़ कर किनके नामों को लिखें ? सारे संसार के लोग तो इनको ही अपना इष्ट मान कर प्रेमपूर्वक इनकी बंदगी करते हैं ।

Nijanand App

अब तो इत कहवे को, रहयो न कोई ठौर ।
रही बात बका अरस की, सो सिफत हैं जोर ॥४६॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश का नाम गिन लेने के बाद तो संसार में कहने की कोई बात ही नहीं रही जहां ब्रह्ममुनियों की महिमा न की गई हो । अखण्ड परमधाम की बात ही और है । अखण्ड परमधाम की लीला और सुखों की सिफत का तो पारावार ही नहीं है । जहां पर मोमिन अक्षरातीत पारब्रह्म के साथ पल-पल अखण्ड सुख प्राप्त करते हैं ।

अक्षर ठौर अखण्ड जो, जाके पल थें पैदा कई इण्ड ।
सो उपज फना हो जात हैं, त्रिगुन समेत ब्रह्मांड ॥४७॥

अक्षर ब्रह्म का धाम अखण्ड है जिसके एक पल में इस संसार जैसे अनेक ब्रह्माण्ड त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु और शंकर) सहित बन कर लय (नष्ट) हो जाते हैं ।

ईस्वर महाविष्णु प्रकृति, पल फिरें होत है नास ।
सो अक्षर इन सैयन की, करें दीदार की आस ॥४८॥

ईश्वर, महाविष्णु और प्रकृति तक सब कुछ अक्षर ब्रह्म के एक क्षण में नष्ट हो जाते हैं । ऐसे अक्षरातीत के सत अंग समर्थवान अक्षरब्रह्म सदा इन ब्रह्मसृष्टियों की आस (चाहनां) करते रहते हैं ।

ए तो कही वेद की, और लिखी सिफत कुरान ।
सो सब सैंया पावहीं, कर देवें पहिचान ॥४९॥

ये सब शोभा तो वेद-शास्त्रों में लिखी है, कुरान में भी इनकी महिमा का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है किन्तु इन सब सुखों को लेने योग्य तो मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) ही हैं और इनकी कृपा से सारी दुनियां को पहचान होनी है ।

बीच किताबों में कही, सैयों की सिफत ।
सबमें रोसनी होएगी, फरदा रोज कयामत ॥५०॥

सब धर्म-ग्रन्थों (वेद और कतेब) में जो इनकी महिमा लिखी हुई है, सारी दुनियां को उसकी पहचान फरदा रोज कयामत के जाहेर होने पर हो जाएगी ।

हुकम नूर खुदाए का, जो है नूर जलाल ।
दाएम आवे दीदार को, फिरे मुजरा कर नूरजमाल ॥५१॥

पारब्रह्म अक्षरातीत के सत अंग अक्षरब्रह्म राज जी महाराज के हुकम से उनके दर्शन करने आते हैं और प्रणाम करके वापस चले जाते हैं ।

Nijanand App

तहां पैदा फना होत है, ए जो चौदह तबक ।
जहां जबराईल रहत है, पहुंच ना सक्या हक ॥५२॥

फिर अक्षरब्रह्म चौदह लोकों वाले इस ब्रह्मांड को बनने और मिटने का हुकम देते हैं । अक्षर ब्रह्म के आधीन ही जबराईल फरिश्ता रहता है । वह भी अक्षरातीत के धाम नहीं जा सका ।

तिन हक का मेहेबूब, महम्मद अलेहु सलाम ।
सो आया गिरोह वास्ते, रसूल अपना नाम ॥५३॥

वह अक्षरातीत पारब्रह्म सच्चिदानंद पूर्ण ब्रह्म सर्वशक्तिमान हजरत मुहम्मद के माशूक हैं अर्थात् वह इनको सदा चाहते हैं । उस महंमद पर राज जी महाराज की मेहर हुई और मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के रसूल बन कर संसार में आए ।

रब्बानी गिरोह रब्ब से, किए दाना आप ।
सिफत सुभान इनकी करे, रहे हजूर हमेसा मिलाप ॥५४॥

बारह हजार ब्रह्मसृष्टि पारब्रह्म अक्षरातीत के अंग हैं, इनको ही उस सच्चिदानन्द ने अपनी निजबुध की कुलजम सरूप की वाणी दे कर बुद्धिशाली बना दिया और इनको ही सदा उनके चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

एही औलिया लिल्ला कहे, खुदा के दोस्त ए ।
सो रहे हमेसा हजूर, वास्ते बंदगी के ॥५५॥

यही मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) परमात्मा के मित्र हैं, जिनको कुरान में खुदा का दोस्त-औलिया लिल्ला कहा है और यही पारब्रह्म की सेवा का सुख लेते हैं ।

इनकी जो बीतक भई, ताकी नेक कहों जहूर ।
ए सागर सुख अनगिनती, सो कहयो न जावे नूर ॥५६॥

इन्हीं ब्रह्मसृष्टियों की जो संसार में तीन बार उतर कर लीला करने की बीतक हुई है, उसका थोड़ा सा वर्णन कहता हूं । परमधाम की अखंड आनन्द देने वाली लीलाओं के सुख बेशुमार अनन्त सागरों के समान गिनती से रहित हैं, जिसका जुबां से वर्णन किया ही नहीं जा सकता ।

ए कहावे हक का हुकम, करे वास्ते याद मोमिन ।
जिनकी पहुंची बंदगी, सौंप चले अपना तन मन ॥५७॥

ये सब अक्षरातीत पारब्रह्म का हुकम ही वर्णन करा रहा है ताकि ब्रह्मसृष्टि सदा संसार में रहते हुए इनको याद करें । जिन सुंदरसाथ की सेवा श्री राज जी महाराज के चरणों में पहुंची उन्होंने माया को छोड़ कर अपना तन मन श्री जी के चरणों में समर्पित कर दिया अर्थात् शरीर त्याग दिया ।

Nijanand App

विकार सारी विस्व का, मिटसी इन खुसबोए ।
सुनत सब्द संसार में, बिन मेहनत एक सृष्ट होए ॥५८॥

मोमिनों की पारब्रह्म अक्षरातीत से निसबत (सम्बन्ध) और सेवा की चर्चा जो संसार के लोग सुनेंगे, वो सब अंगों से निर्मल होकर भव से पार हो जाएंगे। सारे संसार के लोग इस वाणी को सुनने के पश्चात् एक मार्ग-दीने इसलाम निजानंद सम्प्रदाय की राह पर चलने लगेंगे ।

ए जो मासूक जबरूत का, कहियत है लाहूत ।
सो इत हुआ जाहिर, ऊपर मसनन्द मलकूत ॥५९॥

अक्षर ब्रह्म के प्रीतम परमधाम में रहने वाले अक्षरातीत श्री राजजी महाराज हैं। मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के यहां आ जाने से सारी दुनियां को भी अक्षरातीत की पहचान इस मिट जाने वाले संसार में हो गई।

हुई जाहिर सब में, काढ्या कुली दज्जाल ।
सरतें सब आए मिली, मोमिन भए खुसाल ॥६०॥

जाग्रत बुद्ध तारतम ज्ञान जब सारे संसार को मिल जायेगा तो दज्जाल, अबलीस, बेइमानी, परमात्मा से मुनकरी, अपने आप सब के दिलों से निकल जायेगी। सब शास्त्र-पुराण और कुरान की भविष्य वाणियों की शर्तें, जो ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के आने तथा सारी दुनियां को अखंड मुक्ति देने की बातें लिखी हैं, वह पूरी हो जायेंगी और सारी दुनियां को मोमिनों की पहचान हो जायेगी। तब मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) खुश होकर वापिस परमधाम जायेंगे ।

तब सोर पड़ा आलम में, दौड़ी सब खलक ।
खोले द्वार मारफत के, पाया सबों ने हक ॥६१॥

श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में ही हकी सूरत अक्षरातीत पूर्णब्रह्म प्रगट हुए हैं। इस बात की पहचान जब सारी दुनियां को हो जायेगी तो सारी दुनियां दौड़-दौड़ कर उनके चरणों में समर्पित होगी और दर्शनों के लिए भागते चले आयेंगे। श्री प्राणनाथ जी ही सबको हकीकत और मारफत के निजबुद्ध के ज्ञान "कुलजम स्वरूप की बाणी" से पूर्णब्रह्म अक्षरातीत की पहचान करा कर अखंड मुक्ति के द्वार खोलेंगे ।

एक पहिले आए पहुंचे, किया रसूल दीदार ।
तिनको द्वार जो भिस्त का, खोला परवरदिगार ॥६२॥

सब से पहले कुलजम सरूप की वाणी से ब्रह्मसृष्टि ने जाग्रत होकर इस वाणी को लाने वाले हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान की तो स्वामी जी ने इनके लिए अखंड परमधाम का दरवाजा खोल दिया ।

Nijanand App

ता पीछे सफ दूसरी, आए मिले असहाब ।
ताको दिया हक सुभान ने, हैयाती का जो आब ॥६३॥

उनके पीछे दूसरी ईश्वरी सृष्टि भी ब्रह्मसृष्टि के साथ आ मिली । उसको भी जाग्रत बुद्ध के तारतम के ज्ञान से अक्षर ब्रह्म के सतस्वरूप में अखंड दूसरी बहिश्त दे दी ।

तीसरी सफ जो आई, तिन पूछा असहाब देखन हार ।
तिनको खोला खालिक नें, भिस्त का दरबार ॥६४॥

तीसरी सृष्टि जीवसृष्टि जो सबसे पीछे आई, उन्होंने भी ईश्वरी सृष्टि की करनी को देख कर तारतम के द्वारा श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान की और श्री जी ने उनकी करनी के अनुसार आठ प्रकार की बहिश्तों के द्वार खोल दिए ।

सोर पड़ा संसार में, तब भया ए ख्याल ।
फिरस्ते सब पीछे फिरे, नींद उड़ी नूरजलाल ॥६५॥

सम्पूर्ण संसार को जब श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान का ज्ञान हो गया तब तीनों सृष्टि के लोगों को पता चल गया कि ये संसार मिथ्या स्वप्न के समान है । ईश्वरी सृष्टि के जीव जब अक्षर के सत्स्वरूप में पहुंचे और ईश्वरी सृष्टि की सुरता अक्षर ब्रह्म में पहुंची तो अक्षर ब्रह्म की नींद खुल गई और जागृत हो गई ।

तब याद किया सुपन को, उठी आठों भिस्त ।
नूर की नजरों चढ़े, करके याद जो कस्त ॥६६॥

तब अक्षर ब्रह्म ने इस संसार में जो अक्षरातीत की लीलाओं को देखा था, उसे याद करने लगा, तो इस संसार के सब जीव आठ बहिश्तों में अखण्ड हो गए, (आठ प्रकार के अखण्ड मुक्ति धाम जीवसृष्टि के लिए खड़े हो गए) । अक्षर ब्रह्म ने ब्रह्मसृष्टि की संसार वाली लीलाओं को जब याद किया तो आठों बहिश्तों को अक्षर ब्रह्म देखने लगा और ये आठों बहिश्तें उसके अन्तस्करण में अखण्ड हो गई ।

सैयां अपने महल में, पहुंचे नूर जमाल ।
खेल देख पीछे फिरे, होए इत खुसाल ॥६७॥

ब्रह्मसृष्टियों ने श्री प्राणनाथ जी की वाणी से जागृत होकर संसार के सुख लिए । खेल को प्रसन्न हो कर देखा । खेल देखकर वो अपने निजघर परमधाम के रंगमहल में श्री राज जी - नूरजमाल अक्षरातीत के चरणों में पहुंच गई ।

Nijanand App

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुनियो मंगलाचरन ।
अपनी बीतक देखियो, सुनियों दोए श्रवन ॥६८॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दरसाथ जी ! ये तुम्हारी ही बीतक, परमधाम से खेल देखने के लिए आने से लेकर वापस परमधाम जाने तक का सार, मंगलाचरण कहा है । इसको वजूद और आत्मा के कानों से सुनिए और विचार कीजिए ।

(प्रकरण ६२, चौपाई ३६४२)

अष्ट पोहोर की सेवा

(जो श्री बंगला जी में विराजे श्री प्राणनाथ जी की मोमिनों ने की)

पहला पहर

सुन्दर सेज सरूप की, अति प्यारी भरी नूर ।
तिनकी सिफत इन जुबां, क्यों कर कहों जहूर ॥१॥

श्री बंगला जी में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के सुंदर स्वरूप की सेज्या, जो मोमिनों की नूरमयी दृष्टि तथा प्यार से भरी है, शोभायमान है । उसकी महिमा इस झूठी जुबां से वर्णन नहीं की जा सकती।

अत प्यारा लाल पलंग, पचरंगी पाटी मिहीं भर ।
प्रेम प्रीत सों सेवहीं, सिरदार साथ सुन्दर ॥२॥

अत्यन्त प्रिय दर्शनीय लाल पलंग है, जो पांच रंग की पतली निवार से बुना हुआ है । श्री प्राणनाथ जी की सेवा सिरदार साथी बड़े प्रेम के साथ स्नेहपूर्वक करते हैं ।

सेज तलाई कोमल, मिहीं चादर धरी नरम ।
सिराने गाल मसुरीए, ए जाने सैंया दिल मरम ॥३॥

पलंग पर नरम तलाई-गद्दा बिछा है । उस पर पतली रेशमी नर्म चादर बिछी है और सिराहने की तरफ गाल मसूरिये-गोल तकिये शोभायमान हो रहे हैं । इस सेज्या को सजाने का ढंग, मर्म, जिन मोमिनों के दिल में अपने धनी का इश्क-प्यार भरा है, वो ही जानते हैं ।

चारों पाए सेज बन्ध, बांधे सनंध कर अत ।
लटके फुमक रेसमी, पचरंग तरंग झलकत ॥४॥

चादर को सलवट से बचाने के लिए चारों कोने पलंग के पायों के साथ सेजबंध से बांध दिए गए हैं। चादर के किनारों में रेशम के फुंदने लटक रहे हैं । उन्हें देखने से उनमें पांच रंगों की झलक, किरणों के समान दिखाई देती है ।

Nijanand App